एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पशुओं में ट्यूबरकुलोसिस (क्षयरोग)

(*नवीन कुमार, प्रियंका सहारण, किरण कुमार, सरीन कम्बोज, प्रमोद यादव एवं रौनक कादयान)
लाला लाजपत राय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा-125004
*संवादी लेखक का ईमेल पता: nknaveen420116@gmail.com

रोग का कारण

क्षयरोग (टी.बी.) एक संक्रामक रोग है जो पशुओं में देखा जा सकता है। इस रोग का कारण माइकोबैक्टेरियम ट्यूबरकुलोसिस कॉम्प्लेक्स (*Mycobacterium tuberculosis* complex) समूह के जीवाणुओं, जैसे कि माइकोबैक्टेरियम बोविस, एम. ट्यूबरकुलोसिस, आदि होते हैं। यह रोग गाय, भैंस, शूकर, बिल्ली, घोड़ा, कुत्ता, ऊंट, भेड़, बकरी, हाथी, विभिन्न पक्षी और जंगली पशुओं को प्रभावित कर सकता है। यह जूनोटिक रोग है, जिसका मतलब है कि यह पशुजन्य रोग मानवों को भी प्रभावित कर सकता है।

रोग संचरण और लक्षण

इस रोग का संचरण विभिन्न तरीकों से हो सकता है, जैसे कि श्वास, आहार, पानी या दूध के माध्यम से। स्वस्थ पशु रोगी पशुओं के संपर्क से संक्रमित हो सकते हैं। रोगी पशुओं के दूध, लार, मल या नाशिका श्रव में जीवाणु संक्रमण हो सकता है और इसे फार्म में प्रवेश करा सकता है। रोग के लक्षणों में कमजोरी, खाने में अरुचि, भूख की कमी, निरंतर क्षीणता, उतार-चढ़ाव वाला बुखार, लिम्फ नोड्स में सूजन, और फेफड़ों में खांसी शामिल हो सकती है। रोगी पशु की हड्डियाँ और पसलियाँ स्पष्ट रूप से दिख सकती हैं, और इसमें गांठदार सूजन और ग्रेनुलोमा जैसे फोड़े भी हो सकते हैं।

टी.बी. ग्रसित पशु और जूनोटिक महत्व

क्षयरोग (टी.बी.) एक जूनोटिक रोग है, और इसका मानव स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण खतरा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, इंसानों में 2021 में एक करोड़ 6 लाख से अधिक नए मामले और 16 लाख मौतें हुईं, और विकासशील देशों में बोवाइन टी.बी. से लगभग 10% मामले होते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने 2030 तक मानव टी.बी. उन्मूलन का लक्ष्य रखा है, और इसके लिए पशुओं में बोवाइन टी.बी. के संचरण को नियंत्रित करना महत्वपूर्ण है।

निदान और बचाव

पीड़ित पशु में क्षयरोग का निदान करना कठिन है, लेकिन ट्यूबरक्यूलिन त्वचा जांच, या पी.सी.आर. के माध्यम से संभव है। रोग को नियंत्रित करने के लिए, संक्रमित पशु को शीघ्र पहचाना और

पुष्टिय निदान किया जाना चाहिए, और उसे बाकी पशुओं से अलग रखना चाहिए। फार्म में नियमित अंतराल पर रोग की जाँच होनी चाहिए और नए पशुओं को खरीदने के समय सत्यापित (परीक्षण-नकारात्मक) पशुओं का चयन करना चाहिए। पशुओं को स्वस्थ और संतुलित बनाए रखने के लिए उचित परिसर और आदतें बनाए रखनी चाहिए।

जूनोटिक संबंधित जैव संरचना वालों के साथ संपर्क से बचना चाहिए और पशुओं के लिए विभिन्न आयु वर्गों के लिए विभिन्न प्रतिबंध लागू करना चाहिए। पशुओं की जाँच के बाद संक्रमित पशुओं को अलग करना और उन्हें अन्य पशुओं से दूर रखना चाहिए। पशुओं को तनावमुक्त, स्वस्थ और प्रतिरक्षा बनाए रखने के लिए प्रयासशील होना चाहिए। सतहों को साफ रखने और कीटाणुरहित करने के लिए उचित प्रबंध आवश्यक है।

पशुओं में टी. बी का उपचार आर्थिक दृष्टि से व्यवहारिक नहीं है, इसलिए संक्रमित पशु को अलग करना और पुनर्निर्माण को प्रोत्साहित करना ही इस रोग के नियंत्रण का सबसे सफल तरीका है।

सारांश

- क्षयरोग, जिसे हम टी.बी. कहते हैं, पशुओं में होने वाली एक संक्रामक बीमारी है जिससे विभिन्न प्रकार के पशु प्रभावित हो सकते हैं, जो माइकोबैक्टेरियम ट्यूबरकुलोसिस कॉम्प्लेक्स के जीवाणुओं से होता है। यह रोग जूनोटिक होने के कारण मानवों को भी प्रभावित कर सकता है।
- इसका संचरण विभिन्न तरीकों से हो सकता है और इसके लक्षणों में कमजोरी, खाने में अरुचि, भूख की कमी, बुखार, और गांठदार सूजन शामिल हो सकते हैं। इससे बचाव के लिए पशुओं को नियमित जाँच और अलग रखना चाहिए, साथ ही उचित प्रबंध और हैजीन की देखभाल की जानी चाहिए।
- टी.बी. से प्रभावित पशुओं का योगदान मानव स्वास्थ्य के लिए भी खतरा है, इसलिए इसे नियंत्रित करने के लिए उचित निरीक्षण और प्रबंध के प्रति सतर्क रहना आवश्यक है। अंत में, इस रोग को नियंत्रित करने के लिए सकारात्मक दिशा में कदम उठाना आवश्यक है ताकि हम स्वस्थता और सुरक्षा के साथ एक सशक्त समाज की दिशा में बढ़ सकें।